ISSN: 2348-4349

KAAV

International Journal of Arts Humanities & Social Sciences

Volume – 3 Issue – 3 JUL -SEP 2016

Impact Factor (2016) : 6.8712

KAAV PUBLICATONS

A Peer Review Bi-Annual Journal

KIJAHS/JUL-SEP2016/VOL-3/ISS-3/A24 ISSN:2348-4349
IMPACT FACTOR(2016) – 6.8712
KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS,HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

निर्मल पुतल की कविताओं में चित्रित आदिवासी स्त्री

(नगाड़े की तरह बजते शब्द कविता - संग्रह के विशेष संदर्भ में)

AUTHORS

A BABU

P.BHASKAR RAO

LECTURER IN HINDI V.R. COLLEGE NELLORE

LECTURER IN HINDI J.B. DEGREE COLLEGE,KAVALI.

निर्मला पुतुल का जन्म एक संताल आदिवासी परिवार में 1972 में हुआ। निर्मला पुतुल एक आदिवासी स्त्री होने के नाते अनेक समस्याओं को समना करना पड़ा है। कवयित्री वचपन से जो-जो देखा, झेला, महसूस किया उन सभी घटनाओं को अपनी अनुभव के साथ उनकी कविताओं में अभिव्यक्त की हैं। उनकी कविताओं में स्त्री शोषण, अत्याचार, बलात्कार, भूख समस्या, अस्तित्व की स्मस्या, पलायन, रोजगार की समस्या के साथ-साथ आदिवासी चेतना भी उभर कर सामने आता है। कवयित्री आदिवसी स्त्रियों के बारे में प्रस्तुत हो रहे गलत लेखन को पुरजोर विरोध करती है। अपना संघर्ष को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। निर्मला पुतुलअन्याय को देखकर सह नहीं पाती है, उसने तुरंत अन्याय के खिलाफ विरोध स्वर में अपनी आवाज उठाती है। कवयित्री आदिवासी भाई-बहनों के अंदर चेतना फैलाती है। आदिवासियों से कवयित्री हमेशा कहती है कि अन्याय के विरूद्ध आवाज उठानी है। इस तरह कवयित्री कहंदर चेतना के बीज बोती है।

निर्मला पुतुल की कविताओं संताल आदिवासी के साथ-साथ झारखण्ड आदिवासी स्त्रियों की जीवन का यथार्थ स्थिति उभर कर सामने आयी है। आदिवासी स्त्रियाँ अपनी गरीबी के कारण किस तरह

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

ISSN:2348-4349
Impact Factor(2016) – 6.8712

की समस्याओं को सामना कर रही है हम इनकी कविताओं के माध्यम से समझ सकते है। निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री की मनो वेदना, आत्मसंघर्ष, भेद-भाव एवं शोषण को प्रमुख रूप से देख सकते है। आदिवासी स्त्रियाँ जो-जो समस्याओं को भोग रही है उन समस्याओं के साथ- साथ स्त्रियों की अंतरीक संघर्ष को निर्मला पुतुलने अपने कविताओं में यथार्थ रूप से प्रस्तुत की है।

दिकू आदिवासियों को नाशा में डूबाकर ही उनका शोषण कर रहा है। नशापन की वजह से आदिवासियों किस तरह की समस्या को सामना करना पड़ रहा है। हम 'चुड़का सोरेन से' नामक कविता के माध्यम से समझ सकते है-

"तुम्हारे पिता ने कितनी शराब पी यह तो मैं नहीं जानती
पर शराब उसे पी गयी यह जानता है सारा गाँव
इससे बचो चुडका सोरेन
बचाओ इसमें डूबने से अपनी बस्तियों के
देखो तुम्हारी ही आँगन में बैठ
तुम्हारे हाथों बना हड़िया तुम्हें पिला-पालाकर
कोई कर रहा है तुम्हारी बहनों से ठिठोली
बड़ी सुलगाने के बहाने बार-बार उठकर रसोई में जाते
उस आदमी की मंशा पहचानो चुड़का सोरेन
जो तुम्हारी औरत से गुपचुपबतियाते बात-बात में दाँत निपोर रहा है
वह कौन-सा जंगली जानवर था चुड़का सोरेन
जो जंगल लकड़ी बीनने गयी तुम्हारी बहन मुँगली को
उठाकर ले भागा ?"[1]

उपरोक्त कविताओं के माध्यम से निर्मला पुतुल आदिवासियों को जागृत करती है। दिकूओं की कुटिलनीति समझकर जीने को इशारा करती है। दिकू लोगों से आदिवासी स्त्रियों की किस तरह हंसी-मजाक किया जा रहा है हम इस कविता के माध्यम से समझ सकते है। पुरूष नशापन की वजह से स्त्री को परिवार का बोझ उठानी होगी। परिवार चलाने के लिए आदिवासी स्त्री को किस तरह की समस्या को सामना करना पड़ रहा है। आदिवासी स्त्री की इज्जत बाहर के लोग किस तरह लूट रहे है हम समझ

. नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल, पृ.सं. 19-20

opyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

सकते है। इसलिए कवयित्री चुड़का सोरेन पात्र की माध्याम से आदिवासियों के अंदर चेतना फैलाती है। सही राह पर चलने को अग्रसर करती है। यहाँ कवयित्री आदिवासियों को नशा छोड़ने की बात करती है। दिकूओं की असलियत पहचाननेकी बात कवयित्री इस कविता के माध्यम से करती है। आदिवासियों से हमेशा कहती है कि सही क्या है, गलता क्या है पहचानना जरूरी है। इसके साथ-साथ आदिवासी स्त्री शोषण, अत्याचार का विरोध कवयित्री अपनी कविता के माध्याम से करती है।

आदिवासी स्त्रियाँ किस तरह गरीबी जीवन जी रही है। ? गरीबी के कारण आदिवासी स्त्रियों की क्या स्थिति है,? भूख की समस्या को आदिवासी किस तरह समना कर रही है। हम 'बहामुनी' नामक कविता के माध्यम से समझ सकते हैं-

"तुम्हारे हाथों बने पत्तल पर भरते हैं पेट हजारों
पर हजारों पत्तल भर नहीं पाते तुम्हारे पेट"[2]

उपरोक्त कविता के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि श्रम करने वाले एक वर्ग है और उसका प्रतिफल भोगने वालें दूसरा वर्ग है। सच्चाई इस कविता के माध्यम से उभर कर सामने आती है। श्रम करने वालों के पेटभर खाना भी नसीब नहीं हो रहा है। लेकिन लूटने वाले आराम से एसी में जीवन जी रहे है। सुबह से शाम तक काम करने वाली आदिवासी स्त्रियँ किस तरह दुर्भर जीवन जी रही है। इस मुद्धा को लेकर किसी को चिंता नहीं है। कवयित्री हमेशा चिंतित रहती है कि आदिवासी स्त्रियों को इस तरह की समस्याओं से मुक्ति मिलना चाहिए। स्त्री मुक्ति के लिए कवयित्री अपनी कलम के आधार निरंतर संघर्ष करती रहती है।

आदिवासी लड़कियों को केंद्र में रखकर रचना करने वाले ग़ैर-आदिवासी चनाकार किस तरह गलत धारणा फेला रहे है। किस तरह कल्पना में आदिवासी स्त्री को देखा जा रहा है हम '**आदिवासी लड़कियों के बारे में**' कविता के माध्यम से समझ सकते हैं-

"ऊपर से काली
भीतर से अपने चमकते दाँतों
की तरह शान्त धवल होती हैं वे

---

[2] . नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल पृ.सं. 12

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

वे जब हँसती हैं फेनिल दूध-सी
निश्छल हँसी
तब झर-झरकर झरते हैं...
पहाड़ की कोख में मीठे पानी के सोते
.....
वे जब खेतों में
फसलों को रोपती –काटती हुई
गाती हैं गीत
भूल जाती हैं जिन्दगी के दर्द
ऐसा कहा गया है
किसने कहे हैं उनके परिचय में
इतने बड़े-बड़े झूठ?
किसने ?"[3]

उपरोक्त कविता के माध्यम से हमें पता चलता है कि आदिवासी स्त्री के बारे में किस तरह गलत साहित्य उभरकर हमारे सामने आ रहा है। आदिवासी स्त्रियाँ भोग रही समस्याओं को छोड़कर रचनाकार कल्पना जगत में रहकर उनकी वर्णन कर रहा है। इस तरह के प्रस्तुतीकरण को कवयित्री पुरजोर विरोध करती है। कवयित्री इस कविता के माध्यम से गैर-आदिवासी रचनाकारों से से कहती है कि आदिवासी स्त्रियाँ जिन-जिन समस्याओं को भोग रही है उन समस्याओं को सही-सही ढंग से अपने रचनाओं में प्रस्तुत करने को आग्रह करती है। आदिवासी स्त्री को देखकर लिखने को कहती है। कल्पना में सच्चाई उभरकर सामने नहीं आ पायेगी। झूठा साहित्य को कवयित्री विरोध करती है। आदिवासी जीवन को साही-सही प्रस्तुत करने को कहती है। सच्चा साहित्य लेखन के लिए रचनाकार को आदिवासियों से जुड़कर अपना लेखन कार्य शुरू करना चाहिए।

कवयित्री निर्मला पुतुलआदिवासियों को एकजुट होकर लड़ने को कहती है। आदिवासियों से हमेशा यह कहती है कि चुप रहना छोड़कर अन्याय के विरूद्ध आवाज अठाने को कहती है। अपना संदेश के माध्याम से आदिवासियों के अंदर चेतना फैलाती है। इस तरह उद्धरण को हम **'खून को पानी केसे लिख दूँ** नामक कविता के माध्यम से समझ सकते हैं-

---

. नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल पृ.सं. 17

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

"मैं तुम सबके खातिर लड़ती रही
और तुम सबके-सब देखते रहे
तमाशाइयों में खड़े मेरी पराजय
अपनी-अपनी रोटी और कुर्सी बचाने खातिर
चुप रहे तुम सबके सब
पर जरा पूछो तो सही, अपने भीतर बैठे आदमी से
कि उस रोज जो कुछ भी किया तुम सबने
क्या वह उचित था ?
.....
हो सकता है, तुम्हारी ही बारी हो !
वे चाहते हैं हमसे
कि हम कभी कोई सवाल नहीं करें उनसे
उनकी नजर से देखें सब कुछ
उनकी ही भाषा में बोलें"[4]

उपरोक्त कविता के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि सबसे पहले आदिवासियों में एकता नहीं है। एक राह पर चलने का ज्ञान आदिवासियों के पास नहीं है। दिकू हमेशा उनको अलग-अलग समुदायों में तोड़कर उनका शोषण किया है। किसी आदिवासी नेता को धन दिखाकर, पद की लालच में उन्हें दिकू अपने कब्जे में रख लेता है। दुनिया अपना स्वार्थ के बल हर ही तो चलता है। यहाँ कवयित्री इस कविता के माध्यम से यह कहना चाहती है कि अपने स्वार्थ, पद, कुर्सी पर बैठने की लालच में अपना समुदाय को कष्ट नहीं पहुँचानाहै। किसी की भीख दियी हुईबोटील के लालच में अपने समुदाय को धोखा नहीं देने को कहती है। यह सब आदिवासियों को दबाकर रखने के लिए दिकू हमसे धेल रहा है। हमारे आदमियों को उनके कब्जे में लेकर हमारी जिंदगियों से खेल रहा है। इस तरह कुटीलनीति से आदिवासियों को बचकर आगे चलना है। इस तरह कवयित्री आदिवासियों को चेतावनी देती है।

आदिवासी लड़कियों ने किस तरह का संबंध थी परिवार सद्यों के साथ-साथ जानवरों से, हरेक चीजों से किस तरह अपना स्नेह रखती है। आदिवासी लड़की शादी के पश्चात ससुराल जाने से पहले किस

[4]. नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल पृ.सं. 33-34

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

ISSN:2348-4349
Impact Factor(2016) – 6.8712

तरह की मनो वेदना को प्रकट करती है। हम **'माँ के लिए, ससुरल जान से पहले'** नामक कविता के माध्यम से समझ सकते हैं-

"माँ !
चली जाऊँगी एक दिन छोड़कर
तुम्हारा घर आँगन
बरतुहारी जो कर आयी हो
तुम....
रस्सी में गाँठ-सी
बाँध जो आयी हो मेरी शादी की तिथि !
पर क्या सचमुच
जा सकूँगी पूरी का पूरी यहाँ से ?
आँगन में पड़े टूटे झाड़ू-सा
पड़ी रह जाऊँगी कुछ न कुछ यहाँ
बची रह जाऊँगी
गोहाल में गोबर फेंकने के डलिये में
सटे गोबर की तरह
पानी के खाली घड़े में
भरी रह जाएँगी मेरी यादें
जंगल से लायी लकड़ियों के गठ्टर में बँधी
रस्सी की तरह
बंधी रह जाऊँगी तुमसे
.....
चटाइयाँ बुनती
और ऐसे में जब लगेगी प्यास
उठना चाहकर उठ नहीं पाओगी
बार-बार निहारोगी घड़े
झाँकोगी इधर-उधर

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

तब क्या याद नहीं आएगा मेरी ?
कहे न माँ,
याद नहीं आएगी मेरी ??"

उपरोक्त कविता के माध्याम से हमें यह पता चलता है कि आदिवासी स्त्री की रिश्ता परिवार सदस्यों के साथ किस तरह का है। माँ-बेटी का संबंध हमें पता चलता है। आदिवासी स्त्री की यादें किस-किस चीजों से जुड़ी हुईहै। हम समझ सकते है। आदिवासी स्त्री प्रकृति से जुड़ी हरेक चीज से अपना स्नेह रखती है। याद किस तरह होती है हम निर्मला पुतुलकी इस कविता के माध्यम से समझ सकते है। कवयित्री आदिवासी स्त्री री पवित्र रिशता के साथ वह किस तरह स्नेह के साथ अपनी जिंदगी में आगे बढ़ती है। हम समझ सकते हैं। आदिवासी लड़की अपने मन की अंदर छिपी हुई कामनाओं को किस तरह व्यक्त करती है। जंगल के साथ उनका संबंध किस तरह का हैं। हम **'उतनी दूरमत व्याहना बाबा'** नामक कविता के माध्यम से समझ सकते हैं-

"बाबा !
मुझे उतनी दूरमत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने खातिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े तुम्हें
मत ब्याहना उस देश में
जहाँ आदमी से ज्यादा
ईश्वर बसता हों
जंगल नदी पहाड नहीं हों जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन
.....
मत चुनना ऐसा वर
जो पोचई और हड़िया में डूबा रहता हो अकसर
काहिल-निकम्मा हो
माहिर हो मेले से लड़कियाँ उड़ा ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी खातिर
कोई थारी-लोटा तो नहीं

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved

ISSN:2348-4349
Impact Factor(2016) – 6.8712

कि बाद में जब चाहूँगीबदल लूँगी
अच्छा-खराब होने पर
जो बात-बात में
बात करे लाठी-डण्डा की
निकाले तीर-धनुष कुल्हाड़ी
जब चाहे चला जाए बंगाल, असम या कशमीर
ऐसा वर नहीं चाहिए हमें
और उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ
जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं वगाये
फसले नहीं उगयीं जिन हाथों ने
जिन हाथों ने दिया नहीं कभी किसी का साथ
किसी का बोझ नहीं उठाया
और तो और !
जो हाथ लिखना नहीं जानता हो 'ह' से हाथ
उसके हाथ मत देना कभी मेरा हाथ !"[5]

उपरोक्त कविता के माध्यम से आदिवासी लड़की की आत्म संघर्ष को हम जान सकते हैं। आदिवासी स्त्री अपना परिवार के साथ अपना गरीबी एवं आर्थिक स्थिति को लेकर चिंतित है। आदिवासी स्त्री हमेशा परिवार को लेकर चितित रहती है। इसके साथ-साथ नशापन के खिलाफ अपनी आवाज उठाती है। गंगल के साथ उनका संबंध व्यक्त करती है। वीरता को बल देती है। सहयोग भावना के साथ चलने को कहती है। आदिवासी को शिक्षत रहने को कहती है। शिक्षा की महत्व को लेकर चिंतित है। इस तरह कवयित्री अनेक मुद्धाओं को लेकर अपना अनुभव को इस कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। आदिवासी स्त्री कामानओं को, संघर्ष को, वेदनाओं को इस कविता में कवयित्री ने यथार्थ ढंग से प्रस्तुत करके आदिवासियों के अंदर चेतना फेलाती है।

[5]. नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल, पृ.सं. 49-50

Copyright © 2016 Published by kaav publications. All rights reserved